सांध्य दैनिक

4PM

सच्चाई का सामना ऐसे कीजिये जैसे कि वो है, ना की जैसी थी या आप उसे जैसा होना चाहते हैं।

-जैक वेल्च

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 336 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, मंगलवार 13 जनवरी, 2026

दूसरे वनडे कल, जीत के इरादे से... 7 | तमिलनाडु में भाजपा व डीएमके... 3 | भाजपा विधायक ही एसआईआर में... 2

ड्रैगन ने चल दी चाल अब क्या करेगा भारत

सीपीईसी पर चीन की दादागीरी, इलाका हमारा, कश्मीर पर वही पुराना झूठ

» पूर्व से चीन दबाव बना रहा है दूसरी तरफ पश्चिम एशिया में हालात अस्थिर हो रहे हैं

» ट्रंप ने ईरान के साथ व्यापार करने पर 25 फीसदी अतिरिक्त टैक्स लगाने की बात कही

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ड्रैगन ने एक बार फिर चाल चल दी है। इस बार न लद्दाख की बर्फ में न अरुणाचल की पहाड़ियों में बल्कि आर्थिक गलियारे सीपीईसी की शक्ल में एक ऐसा सैनिक रास्ता जो भारत की संप्रभुता के दिल से होकर गुजरता है। सीपीईसी को लेकर चीन के ताजा बयान को महज कूटनीतिक सफाई नहीं बल्कि सीधा शक्ति प्रदर्शन के तौर पर देखा जा रहा है।

चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने बयान जारी किया है कि इलाका हमारा है कश्मीर पर हमारा रुख बदला नहीं है। बयान को भारतीय विदेश मंत्रालय ने सिरे से खारिज कर दिया है। लेकिन चीन के इस बयान की टाइमिंग पर सवाल उठना शुरू हो गये हैं। साफ शब्दों में कहा जाए तो बीजिंग ने भारत को यह बता दिया है कि वह न तो उसकी आपत्तियों को मानता है और न ही अंतरराष्ट्रीय कानून की व्याख्या में भारत को कोई अहमियत देता है। सीपीईसी के बहाने चीन अब उस इलाके में बुनियादी ढांचा खड़ा कर रहा है जिसे भारत अपना अभिन्न हिस्सा मानता है। और यही वह बिंदु है जहां यह परियोजना सड़क नहीं बल्कि रणनीतिक घेराबंदी बन जाती है।

घिसा-पिटा झूठ बोल रहा है चीन

चीन का यह दावा कि सीपीईसी महज आर्थिक विकास की परियोजना है अब एक घिसा-पिटा झूठ बन चुका है। जिस गलियारे में सुरंगें हैं, एयरस्ट्रिप हैं, फाइबर नेटवर्क हैं और ग्वादर जैसे गहरे समुद्री बंदरगाह हैं वह किसी व्यापारिक सपने से ज्यादा सैन्य रीढ़ लगता है। भारत यह जानता है अमेरिका यह जानता है और चीन भी यह जानता है। बस सार्वजनिक मंच पर मानने से इनकार कर रहा है। समस्या यहीं खत्म नहीं होती। इस पूरे घटनाक्रम के बीच अमेरिका ने ईरान पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने की बात कहकर पश्चिम एशिया में नई आग सुलगा दी है। इसका सीधा असर भारत की ऊर्जा सुरक्षा व्यापार मार्गों और कूटनीतिक संतुलन पर सीधा पड़ेगा। यानी एक तरफ़ चीन पूर्व से दबाव बना रहा है दूसरी तरफ़ पश्चिम एशिया में हालात अस्थिर हो रहे हैं।

आर्थिक गलियारा या सैनिक जाल?

यानी चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा सीपीईसी कागजों में भले ही व्यापार और विकास का सपना हो लेकिन जमीनी हकीकत में यह चीन की सबसे आक्रामक भू रणनीतिक परियोजना है। यह गलियारा शिनजियांग से लेकर ग्वादर तक फैला है और बीच में पड़ता है पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और शक्सगाम घाटी जिस पर भारत का वैध दावा है। भारत की आपत्ति बिल्कुल साफ है कि पाकिस्तान को इस इलाके में किसी भी तीसरे देश को परियोजना देने का अधिकार नहीं है। लेकिन चीन इस आपत्ति को सुनने के बजाय हर बार यह कह कर कि यह आर्थिक परियोजना है राजनीति से कोई लेना-देना नहीं। अपना पुराना राग अलापता है। यह वही चीन है जो दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीप बनाकर उन्हें सैन्य ठिकानों में बदल चुका है। ऐसे में सीपीईसी को लेकर उसके इरादों पर शक होना स्वाभाविक है। ग्वादर बंदरगाह सीपीईसी की जान है। यह बंदरगाह न सिर्फ चीन को अरब सागर तक सीधी पहुंच देता है बल्कि भारतीय नौसेना की गतिविधियों पर नजर रखने का ठिकाना भी बन सकता है। सड़कें और रेल लाइनें जिनका प्रचार व्यापार के नाम पर किया जा रहा है असल में तेज सैन्य मूवमेंट के लिए तैयार की जा रही हैं।

बंग्लादेश में असंतोष

दक्षिण एशिया का नक्शा भी भारत के पक्ष में शांत नहीं है। बांग्लादेश में असंतोष की आंच है पाकिस्तान आर्थिक रूप से चरमरा रहा है लेकिन सैन्य दुस्साहस से बाज नहीं आ रहा। नेपाल और श्रीलंका जैसे देश चीन की कर्ज कूटनीति में उलझ चुके हैं। और इन सबके बीच भारत जो युद्ध नहीं चाहता है रणनीतिक संतुलन की सबसे कठिन परीक्षा से गुजर रहा है। सीपीईसी पर चीन का बयान इस बात का संकेत है कि बीजिंग अब पर्दे के पीछे का खेल छोड़ चुका है। यह अब खुली चुनौती है भारत की क्षेत्रीय संप्रभुता उसकी विदेश नीति और उसकी उभरती वैश्विक भूमिका के लिए।

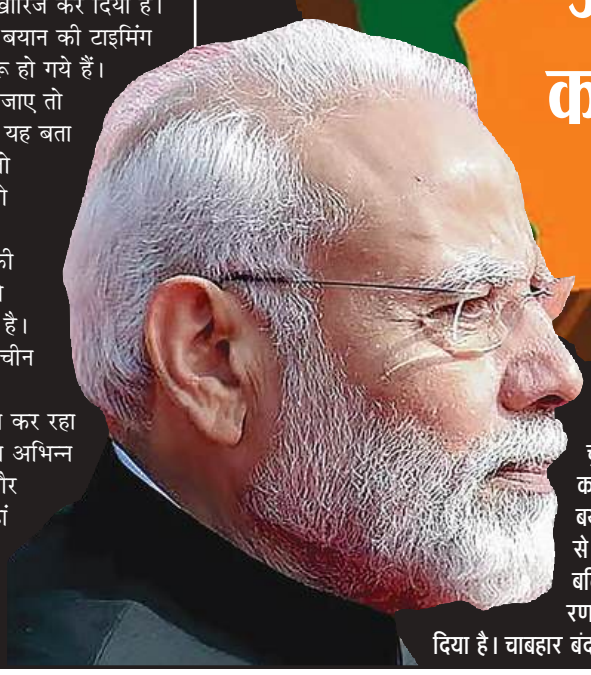

भारत का जवाब रणनीति से

भारत ने इस चुनौती का जवाब बयानबाजी से नहीं बल्कि रणनीति से दिया है। चाबहार बंदरगाह, इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर, इंडो-पैसिफिक में सक्रिय भूमिका यह सभी कदम चीन केसीपीईसी मॉडल का संतुलन बनाने की कोशिश हैं। भारत जानता है कि सीधे टकराव से युद्ध का खतरा है और कूटनीति में धैर्य सबसे बड़ा हथियार।

ट्रंप की फिर चेतावनी खराब होंगे हालात

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की कि जो देश ईरान के साथ कारोबार करेंगे उन पर अमेरिका के साथ व्यापार करने पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाया जाएगा। भारत के लिए इसका मतलब यह है कि अमेरिका को निर्यात होने वाले भारतीय उत्पादों पर कुल मिलाकर 75 प्रतिशत तक शुल्क लग सकता है। इससे भारतीय कारोबारियों और उद्योगों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है।

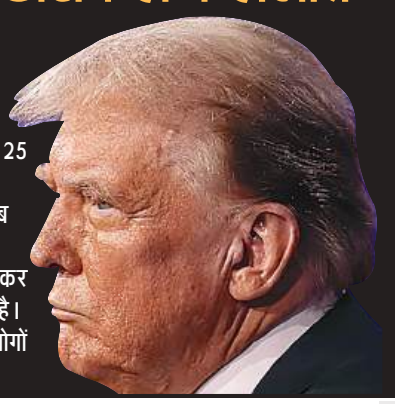

भाजपा विधायक ही एसआईआर में बेईमानी की बात कह रहे हैं : अखिलेश यादव

» सपा ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। एसआईआर को लेकर सपा ने एकबार फिर चुनाव आयोग पर व भाजपा सरकार पर निशाना साधा है। सपा प्रमुख ने अखिलेश यादव ने आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाया है। बता दें सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच खींचतान जारी है। एक दिन पहले वोट जुड़वाने की बात पर यूपी बीजेपी अध्यक्ष पंकज चौधरी की रैली के दौरान भाजपा विधायक के बयान को लेकर सपा ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए। इस पर चुनाव आयोग ने जवाब दिया है।

दरअसल, सपा ने एक्स पर एक पोस्ट किया था। इस पर भाजपा विधायक के बयान का जिक्र करते हुए लिखा था कि,भाजपा विधायक की स्वीकारोक्ति एक हफ्ते में इन्होंने 18 हजार से अधिक वोट बढ़वा लिए हैं। इसको लेकर सपा ने चुनाव का कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए। साथ ही एसआईआर कार्य में बेईमानी का आरोप लगाया। अब इस पर चुनाव आयोग ने अपना जवाब दिया है।

आयोग ने कहा- सशंकित होने की आवश्यकता नहीं

समाजवादी पार्टी की तरफ से एक्स पर उठाए गए सवाल का एक्स पर ही रिप्लाई करके चुनाव आयोग ने उत्तर दिया। आयोग ने लिखा कि सशंकित होने की आवश्यकता नहीं है। एक सप्ताह में संबंधित विधानसभा में वोटरों का नाम वोटर लिस्ट में जोड़ने के लिए मात्र 14707 फ़ॉर्म-6 ही दर्ज हुए हैं। 6 जनवरी 2026 को ड्राफ्ट वोटर लिस्ट के प्रकाशन के बाद से अब तक तक इस विधानसभा में एक भी वोट नहीं बढ़ा है। बिना वास्तविकता की पड़ताल किए किसी के बयानमात्र के आधार पर चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर संदेह करना अन्यायपूर्ण है।

घर बैठे डाउनलोड कर सकते हैं ई-वोटर कार्ड

सीईओ आगे बताते हैं कि अगर आप फॉर्म-6 भरकर मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करा रहे हैं और फॉर्म में अपना मोबाइल नंबर भरा है, तो आपका नाम वोटर लिस्ट में जुड़ते ही (10-15 दिन में) अपना ई-वोटर कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। प्रिंट किया हुआ वोटर आईडी कार्ड डाक विभाग के माध्यम से आवासीय पते पर भेजने में समय लग जाता है। मोबाइल नंबर दर्ज होने पर जितनी बार चाहें, उतनी बार अपना ई-एपिक घर बैठे ही डाउनलोड कर सकते हैं। मतदाता सूची और वोटर आईडी कार्ड (एपिक) में त्रुटियों को घर बैठे ही ऑनलाइन फॉर्म-8 भरकर त्रुटियों को ठीक करने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

यूपी में एसआईआर की निगरानी करेगी कांग्रेस : अजय राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बताया कि समिति मंगलवार से एसआइआर की प्रक्रि या की निगरानी शुरू करेगी। निगरानी के लिए पहले ही सभी जिलों के कांग्रेस नेताओं को जिम्मेदारी सौंपी जा चुकी है। कांग्रेस की 12 सदस्यीय समिति राज्य में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) की निगरानी करेगी।

पार्टी ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय को समिति का संयोजक नियुक्त किया है। इसके अलावा कांग्रेस विधान मंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना, सांसद किशोरी लाल शर्मा, सांसद इमरान मसूद, सांसद राकेश राठौर, सांसद तनुज पुनिया, सांसद उज्जवल रमण सिंह, विधायक वीरेन्द्र चौधरी, पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, पूर्व सांसद पीएल पुनिया, कांग्रेस वार रूम के प्रभारी संजय दीक्षित व प्रदेश कांग्रेस विधि विभाग के अध्यक्ष आसिफ अली रिजवी उर्फ रिंकू को समिति में शामिल किया गया है। समिति जिला व शहरी कांग्रेस के नेताओं के साथ समन्वय स्थापित कर जिन लोगों के नाम गलत तरीके से मतदाता सूची से काटे जा रहे हैं, उनके नाम दोबारा सूची में जुड़वाने का कार्य करेगी। उन्होंने बताया कि समिति रोजाना सभी जिलों से एसआइआर की रिपोर्ट लेकर अपने स्तर से उसकी समीक्षा करेगी।

खेलों में हरियाणा के साथ भेदभाव कर रही भाजपा : भूपेंद्र सिंह हुड्डा

» पूर्व सीएम का केंद्र और प्रदेश की भाजपा सरकार पर खिलाड़ियों की अनदेखी का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने खेलों के मामले में हरियाणा के साथ भेदभाव करने का आरोप लगाते हुए केंद्र और प्रदेश की भाजपा सरकारों को कठघरे में खड़ा किया है। हुड्डा ने कहा कि पूरी दुनिया में देश का नाम रोशन करने वाले हरियाणा पर केंद्र सरकार जानबूझकर बेहद कम खर्च कर रही है, जबकि प्रदेश की भाजपा सरकार अपने हक और अधिकारों की लड़ाई लड़ने की बजाय मूकदर्शक बनी हुई है।

हुड्डा ने उत्तराखंड में आयोजित राष्ट्रीय खेलों का हवाला देते हुए कहा कि प्रति पदक खर्च के हिसाब से हरियाणा में मात्र 4.5 लाख रुपये खर्च हुए, जबकि महाराष्ट्र में यह आंकड़ा 43.50 लाख, मध्य प्रदेश और दिल्ली में 1.13 करोड़, बिहार में 1.69 करोड़, उत्तर प्रदेश में 7.85 करोड़ और गुजरात में 11.21 करोड़ रुपये है। खेलो इंडिया के करीब साढ़े तीन हजार करोड़ रुपये के बजट में से हरियाणा को केवल 80 करोड़ रुपये दिए गए। पूर्व सीएम ने कहा कि अगर कॉमनवेल्थ गेम्स के कुछ आयोजन हरियाणा में कराए जाते हैं तो इससे युवा खिलाड़ियों को वैश्विक स्तर की प्रतियोगिताओं का अनुभव मिलेगा और प्रदेश में खेल अवसंरचना को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में 481 खेल स्टेडियम बने और साई के दो केंद्र स्थापित किए गए, लेकिन भाजपा सरकार ने इनके रखरखाव तक के लिए बजट नहीं दिया। हुड्डा ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने पदक लाओ, पद पाओ और एसपैट जैसी खिलाड़ी हितैषी नीतियों को खत्म कर दिया। कांग्रेस ने 750 खिलाड़ियों को सरकारी नौकरियां दी थीं, जबकि भाजपा सरकार ने न तो नियुक्तियां दीं और न ही प्रमोशन और कैश अवार्ड जारी रखे।

वीबी-जीरामजी से विकसित होगा देश : किरण रिजिजू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मनरेगा से बनी योजना वीबी-जीरामजी (विकसित भारत- गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन ग्रामीण) की जानकारी देने के लिए केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू लखनऊ आए हुए हैं।

मीडिया से बातचीत में कहा, वीबीरामजी योजना के तहत भारत के ग्रामीण को विकसित बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने संकल्प लिया है, इसी को लिए यहां एक कार्यक्रम है और अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के साथ एक बैठक भी है। किरण रिजिजू इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में पीसी भी करेंगे। यहां से लोगों को बताया जाएगा कि मनरेगा से वीबी-जीरामजी में क्या फर्क आने वाला है। बता दें कि भारतीय जानता पार्टी की संगठनात्मक बैठक में केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी, प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह की उपस्थिति में इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के जुपिटर हॉल में बैठक होगी।

नीतीश व लालू को साथ में मिले भारत रत्न : तेज प्रताप

» जनशक्ति जनता दल की मांग पर विचार करे केंद्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जनशक्ति जनता दल के प्रमुख तेज प्रताप यादव ने मांग की है कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को नीतीश कुमार के साथ भारत रत्न से सम्मानित किया जाए। तेज प्रताप यादव ने कहा कि लालू प्रसाद यादव को भी भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए।

अगर लोग कह रहे हैं कि नीतीश कुमार को यह सम्मान मिलना चाहिए, तो उन्हें भी दे दीजिए, क्योंकि कहा जाता है कि मेरे पिता और नीतीश कुमार भाई समान थे। यह जनशक्ति जनता दल की मांग है। ये टिप्पणियां जनता दल (यूनाइटेड) के नेता के.सी. त्यागी द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर नीतीश कुमार को भारत रत्न से सम्मानित करने पर विचार करने का आग्रह करने के कुछ दिनों बाद आई हैं। अपने पत्र में त्यागी ने कुमार को समाजवादी आंदोलन का अनमोल रत्न बताया

और कहा कि कई नेताओं को अपने जीवनकाल में यह सम्मान प्राप्त हुआ है। हाल ही में मिले पुरस्कारों का जिक्र करते हुए त्यागी ने लिखा, 30 मार्च, 2024 हमारे पूर्वजों को सम्मान देने का दिन था। आपके प्रयासों के फलस्वरूप ही उन्हें सर्वोच्च सम्मान, भारत रत्न% से नवाज़ा गया। उन्होंने आगे कहा, आपके प्रयासों से प्रभावित होकर मैं विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि स माजवादी आंदोलन के अनमोल रत्न नीतीश कुमार भी इस सम्मान के पात्र हैं। हालांकि, जेडीयू ने त्यागी की अपील से तुरंत खुद को अलग कर लिया। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने कहा कि त्यागी के विचार संगठन की स्थिति को नहीं दर्शाते हैं।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

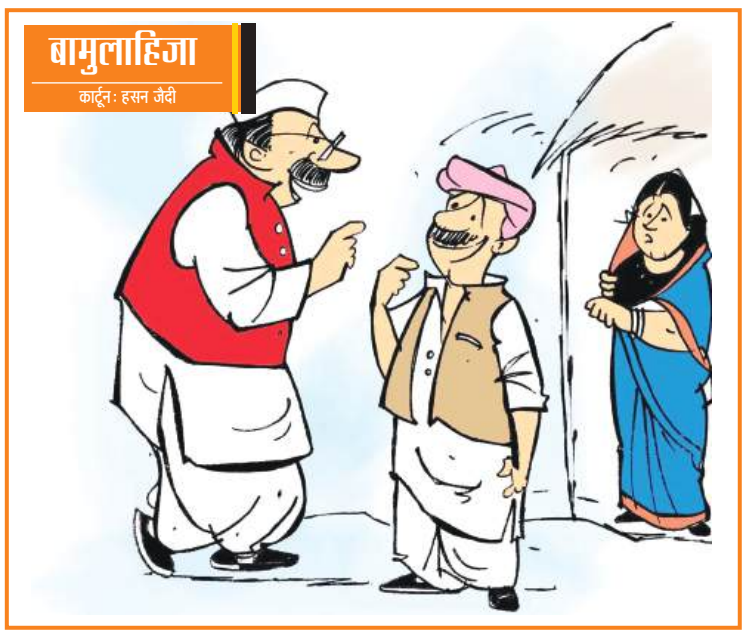

गरीब युवाओं को उकसाने की कोशिश कर रहे एनएसए : महबूबा मुफ्ती

अजीत डोभाल के बयान पर मचा सियासी घमासान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ़्ती ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल पर तीखा हमला करते हुए कहा है कि सदियों पुरानी घटनाओं के बदले की बात करना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।

जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि एनएसए का कर्तव्य राष्ट्र की रक्षा करना है, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उन्होंने नफरत की सांप्रदायिक विचारधारा में शामिल होने का विकल्प चुना है। हम आपको याद दिला दें कि दिल्ली में विकसित भारत युवा नेता संवाद

के उद्घाटन समारोह में डोभाल ने कहा था कि भारत को न केवल सीमाओं पर, बल्कि आर्थिक रूप से भी और हर तरह से खुद को मजबूत करना होगा, ताकि हमलों और दमन के दर्दनाक इतिहास का बदला लिया जा सके। इसके जवाब में अपनी पोस्ट में महबूबा ने कहा, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि डोभाल जैसे उच्च पदस्थ अधिकारी, जिनका कर्तव्य देश को आंतरिक और बाहरी नापाक मंसूबों से बचाना है, उन्होंने नफरत की सांप्रदायिक विचारधारा में शामिल होने और मुसलमानों के खिलाफ हिंसा को सामान्य बनाने का विकल्प चुना है। उन्होंने कहा, सदियों पुरानी घटनाओं को लेकर 21वीं सदी में बदला लेने का आह्वान करना एक डॉग व्हिसल (सांकेतिक संदेश) है, जो गरीब और अशिक्षित युवाओं को एक अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाने के लिए उकसाता है, जो पहले से ही चारों ओर से हमलों का सामना कर रहा है।

तमिलनाडु में भाजपा व डीएमके में तेज हुई सियासी जंग

डीएमके भी जी-जान से जनता के बीच पहुंची

सता के लिए बीजेपी एडीएमके को राजी करने में जुटी

» बोले भाजपा नेता- जीते तो साथ करेंगे राज

» डीएमके भी भाजपा को रोकने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु में किसी तरह भी भाजपा सत्ता पर काबिज होना चाहती है। इसी क्रम में बीजेपी ने विधानसभा चुनाव से पहले एआईएडीएमके को सत्ता में साझीदार बनने के लिए मना लिया है। पिछले साल हुई एआईएडीएमके की एनडीए में वापसी थी। उधर भाजपा को रोकने के लिए डीएमके भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती है। इन सबके बीच बीजेपी और डीएमके ने अभी से राज्य के दौरो में तेजी ला दी है।

अमूमन देखा गया है कि तमिलनाडु में राष्ट्रीय दल अपने सहयोगियों के साथ पावर शेयरिंग में पीछे रहे हैं। डीएमके और एआईएडीएमके सहयोगियों के साथ चुनाव लड़ती है मगर मंत्रिमंडल में जगह नहीं देती। तमिलनाडु में बीजेपी और एआईएडीएमके के बीच सीट शेयरिंग के साथ ही पावर शेयरिंग को लेकर भी बातचीत चल रही है। बीजेपी सूत्रों के मुताबिक एआईएडीएमके इसके लिए लगभग राजी हो गई है कि चुनाव से पहले पावर शेयरिंग का ऐलान भी कर दिया जाएगा। यानी ये ऐलान कि अगर एनडीए चुनाव जीतती है तो सरकार एनडीए की होगी ना कि सिर्फ एआईएडीएमके की। विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी और एआईएडीएमके के बीच गठबंधन हुआ है।

पिछले साल एआईएडीएमके ने की एनडीए में वापसी

पिछले साल अप्रैल में जब बीजेपी नेता अमित शाह तमिलनाडु गए थे तब तमिलनाडु की पार्टी एआईएडीएमके की एनडीए में वापसी का ऐलान किया गया। अमित शाह ने बीजेपी और एआईएडीएमके गठबंधन का ऐलान किया। शाह ने कहा था कि विधानसभा चुनाव एआईएडीएमके नेता और पूर्व मुख्यमंत्री एडप्पादी पलानीस्वामी (ईपीएस) के नेतृत्व में लड़ा जाएगा और सरकार एनडीए की बनेगी। हालांकि इस ऐलान के कुछ वक्त बाद ही एआईएडीएमके नेताओं की तरफ से बयान आने लगे जिसमें कहा जाने लगा कि एनडीए चुनाव जीतेगी तब भी सरकार एआईएडीएमके की बनेगी।

तमिलनाडु में अकेले सरकार बनाना चाहते थे एडप्पडी के. पलानीस्वामी

एआईएडीएमके नेता एडप्पडी के. पलानीस्वामी ने भी कुछ मौकों पर कहा कि अगर उनकी पार्टी विधानसभा चुनाव जीतती है तो तमिलनाडु में उनकी पार्टी की सिंगल पार्टी सरकार बनेगी। साथ ही कहा कि हमारा गठबंधन जरूर जीतेगा... लेकिन सरकार एआईएडीएमके ही अकेले बनाएगी। यह गठबंधन एआईएडीएमके के नेतृत्व में है। जिसके बाद से ही पावर शेयरिंग का पेंच फंसता दिखा। हालांकि सूत्रों के मुताबिक अब यह मसला सुलझा लिया है। पिछले हफ्ते ही अमित शाह और एआईएडीएमके नेताओं के बीच हुई मुलाकात में बीजेपी की तरफ साफ कह दिया गया कि सरकार एनडीए की बनेगी यानी बीजेपी भी पावर शेयर करेगी। सूत्रों के मुताबिक एआईएडीएमके नेता चुनाव से पहले खुद ही इसका ऐलान भी कर सकते हैं।

डीएमके और एआईएडीएमके अकेले करती रही है राज

दरअसल तमिलनाडु में गठबंधन होने के बावजूद पावर शेयरिंग मुद्दा पहले से रहा है। तमिलनाडु में आजतक न तो डीएमके ने और न ही एआईएडीएमके ने सत्ता शेयर की है। तमिलनाडु में वैसे तो 1967 से ही चुनाव पूर्व गठबंधन की परंपरा रही है। 1979 से ही कभी डीएमके तो कभी एआईएडीएमके केंद्र में गठबंधन सरकारों का हिस्सा बनते रहे हैं। 1979 में चरण सिंह सरकार में एआईएडीएमके के दो सांसद शामिल थे। करीब एक दशक बाद डीएमके के मुरासोली मारन केंद्र की वी.पी. सिंह की सरकार में मंत्री बने। 1996 से गठबंधन युग की शुरुआत हुई और तब से खास तौर से डीएमके ने लंबे वक्त तक केंद्र की सत्ता में भागीदारी निभाई। 1998-99 में एआईएडीएमके भी वाजपेयी सरकार का हिस्सा रही। वाजपेयी सरकार से लेकर यूपीए-1 और यूपीए-2 तक में डीएमके के लोग केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल रहे। लेकिन जब तमिलनाडु में गठबंधन की बात आती है तो ये दोनों पार्टियां यहां गठबंधन की सरकार नहीं चाहती।

मेयर चुनाव से पहले चंडीगढ़ में रार

प्रभारी जरनैल सिंह की सोशल मीडिया की फोटो से बवाल

» आप व कांग्रेस आमने-सामने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। चंडीगढ़ नगर निगम में मेयर चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच तनातनी बाहर आ गई है। दोनों दलों के नेताओं की सोशल मीडिया पर हुई बयानबाजी ने गठबंधन के भविष्य पर भी सवालिया निशान लग गए हैं।

29 जनवरी को होने वाले मेयर, सीनियर डिप्टी मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव से पहले माहौल काफी गरमा गया है। चंडीगढ़ में आम आदमी पार्टी के प्रभारी जरनैल सिंह ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा की। चंडीगढ़ में 2023-24 के चुनावों में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने गठबंधन में चुनाव लड़ा था। उस समय मेयर आम आदमी पार्टी का चुना गया, जबकि सीनियर डिप्टी मेयर और डिप्टी मेयर बीजेपी के बने थे। तब आरोप लगे थे कि आम आदमी पार्टी के कुछ पार्षदों ने क्रॉस वोटिंग की थी। वहीं 2024-25 के चुनाव में बीजेपी का मेयर बना और कांग्रेस के खाते में सीनियर डिप्टी मेयर व डिप्टी मेयर की कुर्सी गई।

बीजेपी-कांग्रेस की मजबूत सांठगांठ : जरनैल सिंह

आम आदमी पार्टी के प्रभारी जरनैल सिंह ने लिखा कि एक तरफ कट्टर विरोधी होने का दावा और दूसरी तरफ सत्ता में पार्टनरशिप चल रही है। उनका कहना था कि चंडीगढ़ में बीजेपी का मेयर और कांग्रेस का सीनियर डिप्टी मेयर व डिप्टी मेयर होना, बीजेपी-कांग्रेस की मजबूत सांठगांठ का सबूत है। साथ ही उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि यह नूरा कुश्ती अब देश समझ चुका है।

आरोप लगाने से पहले आप अपने पिछले रिकॉर्ड देखे : हरमोहिंदर सिंह

इस बयान पर चंडीगढ़ कांग्रेस अध्यक्ष हरमोहिंदर सिंह लक्की ने पलटवार किया। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि जब 2024 में मेयर आम आदमी पार्टी का बना था और सीनियर डिप्टी मेयर व डिप्टी मेयर बीजेपी के बने थे, तब आम आदमी पार्टी कौन सा खेल खेल रही थी। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि आरोप लगाने से पहले आम आदमी पार्टी को अपने पिछले रिकॉर्ड पर भी नजर डालनी चाहिए।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

दुनिया मान रही हिंदी देश कब मानेगा?

यूएन की रिपोर्ट के अनुसार हिंदीबोलने वालों की दुनिया में संख्या बढ़ रही है। पर भारत में उसके अपने ही राज्यों में उसका विरोध हो रही है। विरोध करने वालों में महाराष्ट्र व दक्षिण के राज्य शामिल हैं। इन राज्यों के नेता तो हिंदी का आदर करने की बात तो करते हैं पर इसे थोपने पर विरोध का झंडा भी बुलंद करते है। हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाला विश्व हिंदी दिवस केवल एक औपचारिक या प्रतीकात्मक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा की वैश्विक यात्रा, उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा, उसके सामने उपस्थित चुनौतियों और हमारे अपने राष्ट्रीय आचरण की विडंबनाओं पर गहन चिंतन का अवसर है। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति कराता है जब पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी बोली गई थी और भारत की सांस्कृतिक आत्मा ने विश्व मंच पर अपनी मौलिक पहचान दर्ज कराई थी।

आज स्थिति यह है कि हिंदी विश्व में सम्मान, स्वीकार्यता और लोकप्रियता की नई ऊंचाइयों को छू रही है, लेकिन अपने ही देश में वह अपेक्षा, उपेक्षा और संकोच के बीच झूलती दिखाई देती है। यही विरोधाभास विश्व हिंदी दिवस को और अधिक प्रासंगिक बना देता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर में फैले हिंदी जानकारों, हिन्दीभाषियों को एकजुट करना, हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित एवं प्रोत्साहित करना और हिंदी की आवश्यकता से अवगत कराना है। अंग्रेजी भाषा भले ही दुनियाभर के कई देशों में बोली है और लिखी जाती है लेकिन हिंदी हृदय की भाषा है। विश्व हिन्दी दिवस विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करने तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का प्रभावी उपक्रम है। हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है, वह भारतीय सभ्यता, संस्कृति, संवेदना और सामूहिक चेतना की वाहक है। यह लोक से उपजी, लोक में पली और लोक के लिए ही जीने वाली भाषा है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, बॉलीवुड, भक्ति साहित्य और डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह दुनिया की तीसरी या चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, अंग्रेजी और मंदारिन चीनी के बाद, और भारत के साथ-साथ नेपाल, मॉरीशस, फिजी जैसे देशों में भी इसका व्यापक उपयोग है और यह विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रही है। राजनीतिक दलों को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी के प्रति सम्मान को बढ़ाना चाहिए।

“ हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाला विश्व हिंदी दिवस केवल एक औपचारिक या प्रतीकात्मक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा की वैश्विक यात्रा, उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा, उसके सामने उपस्थित चुनौतियों और हमारे अपने राष्ट्रीय आचरण की विडंबनाओं पर गहन चिंतन का अवसर है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

विदेश नीति के चुनौतीपूर्ण दौर से गुजरता देश

ज्योति मल्होत्रा

वर्ष 1998 में भारत द्वारा किए परमाणु परीक्षणों के बाद जब अमेरिका ने प्रतिबंध लगाए थे और परस्पर संवाद लगभग बंद हो गया था- यह पहली बार है जब अपने सबसे शक्तिशाली इस भागीदार के साथ भारत के संबंध खतरनाक रूप से नए निचले स्तर पर हैं। पिछले कुछ दिनों में, व्हाइट हाउस के उच्चतम गलियारों से तंज कसे गए हैं, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी को एक निवेदन करने वाले के रूप में दिखाया गया है कि प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति ट्रंप से कहा 'सर, क्या मैं आपसे बात कर सकता हूं'। हां, माना जाता है कि अमेरिका की 'महान श्वेत आशा' ने उत्तर दे दिया। पिछली बार जब एक प्रधानमंत्री -डॉ. मनमोहन सिंह- को एक अमेरिकी राष्ट्रपति के समक्ष विनीत जैसा पाया गया था (2008 में उन्होंने जॉर्ज डब्ल्यू बुश से कहा 'भारत आपसे प्यार करता है'), तो देश में गुस्से का विस्फोट होना वाजिब था। सिर्फ 24 घंटे पहले, विदेश मंत्रालय ने मोदी द्वारा कही कथित बात को खारिज कर दिया।

लेकिन संबंधों का यूं रसातल में जाते देखना बहुत बुरा लगा। एक चमकदार अतीत से जुड़ी अद्वितीय और महान सभ्यता के उत्तराधिकारी के रूप में भारतीय अभिजात वर्ग का अमेरिका द्वारा जिस प्रकार उपहास उड़ाया जा रहा है, महज इसलिए कि भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने की हिम्मत दिखाई- इस मामले में, कुछ अमेरिकी कृषि वस्तुओं पर आयात शुल्क घटाने से इंकार करना और सस्ते रूसी तेल की खरीद बंद करने से मना करना -वह बहुत परेशान करने वाला है। जैसा कि अमेरिकी वाणिज्य सचिव हॉवर्ड लटनिक ने एक पत्रकार से कहा, अमेरिकी प्रशासन ने भारत को अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर सहमति देने के लिए तीन सप्ताह की मोहलत दी थी। इसके सिलसिले में मोदी को व्यक्तिगत रूप से ट्रंप को फोन कर समझौते पर हस्ताक्षर की रजामंदी जाहिर करनी थी। लेकिन प्रधानमंत्री ने फोन कॉल नहीं की। आखिरकार, जब भारतीय पक्ष ने संपर्क किया, तो लटनिक ने उनसे कहा 'बहुत देर हो चुकी है'। निश्चित रूप से, इसमें कुछ भी नया नहीं।

भारत तो विशेष रूप से पश्चिमी नेताओं के सम्राटों की तरह पेश आने और अपना दबदबा दिखाए जाने का आदी है। विदेश मंत्रालय के अंदर, और बाहर भी, हर कोई उस दोगलेपन को समझता है जो बड़ी शक्तियों द्वारा खासकर शीत युद्ध के दौरान बरता जाता रहा, मीडिया ने उन्हें बेनकाब करने में कमी नहीं छोड़ी। समस्या यह है कि कम

से कम पिछले 20 सालों से, भारत सोचता था कि वह अमेरिकियों के साथ खड़ा है। हमने उनका हास-परिहास अपनाया, हमारे बच्चे उनके कॉलेजों में गए -भारतीय माता-पिता ने अपना पेट काटकर उन्हें वहां भेजने के वास्ते डॉलर खरीदने के लिए बचतें की- और हमारी आईटी विशेषज्ञ पीढ़ी ने अमेरिका को बारंबार महान बनाने के लिए एचवन-बी वीजा लगवाया। हम बराबरी के थे। या कम से कम हम ऐसा सोचते रहे। विदेश मंत्री एस जयशंकर, जोकि मोदी मंत्रिमंडल के सबसे समझदार लोगों में से एक हैं, पुराने भारत के नए भारत में रूपांतरित होने में भूमिका निभा चुके हैं। भारत के शीर्ष राजनयिकों में से एक होने के नाते उन्हें दोनों पक्षों के लोगों से दोस्ती करने का प्रशिक्षण प्राप्त है। जयशंकर के पिता के. सुब्रमण्यम ने तो 1971 में, बांग्लादेश युद्ध से पहले,पाकिस्तान के प्रति अमेरिका के 'अत्यधिक झुकाव' के लिए तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर को खरी-खरी सुनाई थी (सुब्रमण्यम ने किसिंजर से पूछा था, आप पाकिस्तान का समर्थन क्यों कर रहे हैं जबकि पाक सेना द्वारा नरसंहार से बचने के लिए लाखों पूर्वी पाकिस्तानी नागरिक भारत में शरण ले रहे हैं, करीब 1 करोड़, और क्या आपको यह भी याद नहीं कि आपके अपने समुदाय यानि यहूदियों ने हिटलर के हाथों क्या झेला था?)। नई वैश्विक व्यवस्था में, ट्रंप से हिल चुकी दुनिया के सामने भारत की विलक्षण स्थिति को, बतौर एक प्राचीन राष्ट्र जिसका लंबा औपनिवेशिक अतीत है, की स्थिति समझाने को जयशंकर एकदम उपयुक्त्स हैं। तो गलती कहां रही? ट्रंप का अमेरिका, मोदी के भारत का उपहास क्यों कर रहा , जबकि हम दोनों को एक पाले में होना चाहिए था, खासकर जब दुनिया को चीन से बचाने की कोशिश में हमारी ओर देखा जा रहा था?

इसके कई जवाब हैं, कुछ खुशगवार, कुछ उतने नहीं। पहला, ट्रंप का अहंकार- उन्हें लगता है दुनिया को स्थाई तौर पर उनकी पिछलग्गू बन जाना चाहिए। लेकिन जब मोदी ने व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए ट्रंप को कॉल करने से इंकार किया, तो अमेरिकियों ने अलग ढंग से दबाव बनाया- कहा कि अब ऐसा कोई समझौता नहीं हो सकता।

स्मरण शक्ति और एकाग्रता भी बढ़ती है नमस्कार से

रेणु सैनी

भारत के अलावा कई देशों में भी नमस्कार की मुद्रा को अत्यंत प्रभावशाली और चमत्कारी माना जाता है। जापानी भाषा में इसे 'गाशो' कहा जाता है। भारत समेत कई देशों का यही मानना है कि हाथ जोड़ना केवल एक शारीरिक मुद्रा नहीं, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक मनोस्थिति को भी दर्शाता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार, हमारे हाथ ऊर्जा के उत्सर्जन केंद्र हैं। जब नमस्कार की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़े जाते हैं तो मन को असीम शांति मिलती है। प्रार्थना के लिए दोनों हाथों को जोड़ा जाता है। भारत के अलावा कई देशों में भी नमस्कार की मुद्रा को अत्यंत प्रभावशाली और चमत्कारी माना जाता है। जापानी भाषा में इसे 'गाशो' कहा जाता है। भारत समेत कई देशों का यही मानना है कि हाथ जोड़ना केवल एक शारीरिक मुद्रा नहीं है, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक मनोस्थिति को दर्शाता है। जब हम हाथ जोड़ते हैं तो हमारी अंगुलियों के सिरे एक-दूसरे पर दबाव डालते हैं। ये प्रेशर प्वाइंट्स हमारे मस्तिष्क के उन हिस्सों से जुड़े होते हैं जो स्मरण शक्ति और एकाग्रता के लिए जिम्मेदार होते हैं।

वहीं जापान में 'गाशो' के माध्यम से यह बताया जाता है कि जब दाएं और बाएं हाथ आपस में मिलते हैं, तो ये दो विपरीत चीजों के मिलन के प्रतीक होते हैं जैसे स्वयं और दूसरा, प्रकाश और अंधकार। इनसे यह पता चलता है कि ब्रह्मांड में सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और हम अलग-अलग नहीं हैं। गाशो की मुद्रा में व्यक्ति का मन भटकना बंद कर देता है। मन एक ही स्थान पर केंद्रित हो जाता है। इसलिए अक्सर स्कूल में बच्चों को पढ़ाने से पहले दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना कराई जाती है। हमारे देश में जब कोई महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ किया जाता है तो पहले दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर का स्मरण किया जाता है। ऐसा करने से मस्तिष्क की ऊर्जा एकाग्र हो जाती है और जिस कार्य को किया जाने वाला है, उसे बल मिलता है। हाथ जोड़ने का सही तरीका यह है कि दोनों हथेलियों को अपने हृदय चक्र के पास सटाकर रखना चाहिए। ऐसा करने से हृदय सकारात्मक होता है। हृदय को यह अहसास होता है कि नकारात्मक बिंदुओं को बाहर निकालना है और सकारात्मक बातों को अपने अंदर रखना है। यही कारण है कि जो लोग विनम्रता में हाथ जोड़कर बातें करते हैं, अथवा किसी विवादास्पद मुद्दे को हाथ जोड़कर खत्म करते हैं तो हाथों की सकारात्मक तरंगें निकलकर परिवेश में घुल जाती हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके हाथ नहीं होते। ऐसे में वे प्रार्थना की मुद्रा किस प्रकार बनाएं? इस दर्द को समझा प्रणव वेम्पाती और उनकी टीम ने। प्रणव वेम्पाती, हर्षा रेड्डी पोंगुलेटी और सुरेन मरुममुला द्वारा वर्ष 2018 में एक स्टार्टअप की स्थापना की गई। वे मिसाइलमैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से बेहद प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने कलाम से संबंधित कलार्म बनाने की सोची। आज भी देश में अनेक लोग ऐसे हैं जो कृत्रिम अंगों विशेषकर कृत्रिम हाथों को खरीदने में असमर्थ हैं।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने हृदय रोग के लिए प्रसिद्ध और किफायती 'कलाम स्टेंट' विकसित किया था। इसी स्टेंट के तर्ज पर प्रणव वेम्पाती ने एक ऐसा कृत्रिम हाथ बनाने का निश्चय किया जो लोगों के लिए सुलभ हो सके और वे लोग जिनके हाथ नहीं हैं, वे उसका प्रयोग कर न केवल अपने दैनिक कार्य कर सकें, अपितु दोनों हाथों के माध्यम से प्रार्थना कर अपने हृदय को भी मजबूत कर सकें। इसके लिए प्रणव को हर्षा और सुरेन जैसे सह-संस्थापक मिले। समान सोच के साथ उन्होंने काम करना शुरू किया। विकसित देशों में उन्नत कृत्रिम बायोनिक हाथों की कीमत 35 से 60 लाख तक होती है। प्रणव सबसे सस्ता बायोनिक हाथ बनाने में जुट गए। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रयोग किए। आखिरकार उनकी मेहनत रंग लाई। उन्होंने 'कलार्म' नामक 3डी-प्रिंटेड हाथ बनाया है। यह 18 तरह की ग्रिप देता है, ईएमजी सेंसर से चलता है और 8 किलो तक का वजन उठा सकता है। इसकी कीमत अन्य देशों के मुकाबले बहुत कम है। 'कलार्म' की कीमत चार से छह लाख के बीच है।

प्रणव इससे भी कम कीमत का 'कलार्म' लांच करने की योजना बना रहे हैं। इस तरह वे लोग जो हाथों से वंचित हैं, कलार्म द्वारा न केवल अपने सभी कामों को करके जीवन को आसान बना सकते हैं, अपितु प्रणाम की मुद्रा में अपने तन-मन को ऊर्जा से भी भर सकते हैं। प्रणव कहते हैं कि, 'जीवन में कुछ न कुछ ऐसा करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे मन को सुकून प्राप्त हो। मैं जब भी प्रार्थना करके अपने हाथ जोड़ता हूं तो मेरे मन से यही आवाज आती है कि तुम सक्षम हो तो अक्षम व्यक्तियों का सहारा बनो।' जिन व्यक्तियों के हाथ हैं उन्हें अपने इन हाथों की कीमत को समझना चाहिए और प्रकृति एवं ईश्वर के कृतज्ञ होने के साथ-साथ हाथों से ऐसे कार्य करने चाहिए, जिनसे आस-पास के परिवेश को भी सुख और समृद्धि प्राप्त हो। नमस्कार की मुद्रा में जुड़े हाथ खीझे हुए मन को शांत करने का एक सरल उपाय हैं। कहते हैं कि आधे-अधूरे दिल वाला कोई व्यक्ति चैंपियन नहीं बनता। इसलिए अपने हाथों को हृदय चक्र के पास से जोड़ते हुए पूरे दिल के स्वामी बनें और चैंपियन बनकर दूसरों के जीवन में भी मुस्कराहट लेकर आएं।

मकर संक्रांति से बदलता है वातावरण

हिंदू धर्म में मकर संक्रांति पर्व का विशेष महत्व है। जब सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तब मकर संक्रांति मनाई जाती है। नए साल का सबसे पहला पर्व मकर संक्रांति होता है। मकर संक्रांति हिंदू धर्म का प्रमुख त्योहार माना जाता है। मकर संक्रांति के बाद नदियों में वाष्पन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है, जिससे कई सारी शरीर के अंदर की बीमारियां दूर हो जाती हैं। इस मौसम में तिल और गुड़ खाना काफी फायदेमंद होता है। यह शरीर को गर्म रखता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि उत्तारायण में सूर्य का ताप शीत को कम करता है। 14 जनवरी मकर संक्रांति के साथ ही ठंड के कम होने की शुरुआत मानी जाती है।

पतंग महोत्सव पर्व

यह पर्व पतंग महोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन लोग छतों पर खड़े होकर पतंग उड़ाते हैं। हालांकि पतंग उड़ाने के पीछे कुछ घंटे सूर्य के प्रकाश में बिताना मुख्य वजह बताई जाती है। सर्दी के इस मौसम में सूर्य का प्रकाश शरीर के लिए स्वास्थवर्द्धक और त्वचा और हड्डियों के लिए बेहद लाभदायक होता है।

सूर्य चालीसा का करें पाठ

मकर संक्रांति के दिन सूर्य चालीसा का पाठ करना भी अति उत्तम माना जाता है, इसके अलावा आदित्य हृदय स्रोत का जाप आप कर सकते हैं और सूर्य देव से अपने उज्जवल भविष्य की कामना करें। कहते हैं मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव के सामने अन्न, जल, वस्त्र आदि रखें और फिर इन चीजों का दान जरूरतमंद को करें तो सूर्य देव प्रसन्न होते हैं। ऐसे में मकर संक्रांति पर सूर्य देव को अर्घ्य देने के साथ ही यह खास उपाय कर सकते हैं।

इस तरह सूर्य को दें अर्घ्य

अगर आप चाहते हैं कि आपके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आए तो मकर संक्रांति के दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सबसे पहले स्नान करें और स्नान के पानी में गंगाजल जरूर मिलाएं। गंगाजल ना हो तो तुलसी की मंजरी भी डाली जा सकती है। स्नान के बाद साफ-सुथरे या नए कपड़े पहनें और सूर्य देव का ध्यान करें। 21 बार सूर्य नमोस्तु श्लोक का जाप करें। इसके बाद सूर्य देव को अर्घ्य देने के लिए तांबे के लोटे में शुद्ध जल भरें और नंगे पैर घर की बालकनी या छत पर जाएं. सूर्य देव के 12 नामों का जाप करें और इसके बाद सूर्य देव को अर्घ्य दें। सूर्य को अर्घ्य देने के बाद तीन बार उसी स्थान पर घूमें, यह सूर्य की परिक्रमा करने के बराबर माना जाता है।

शुभ मुहूर्त

वर्ष 2026 में मकर संक्रांति का पर्व 14 जनवरी दिन बुधवार को मनाया जाएगा। इस दिन का पुण्य काल दोपहर 03:13 बजे से आरंभ होगा। वहीं महा पुण्य काल दोपहर 03:13 बजे से शाम 04:08 बजे तक रहेगा। शास्त्रों के अनुसार, इस अवधि में किया गया स्नान-दान और पूजा कई गुना पुण्य फल प्रदान करती है। माना जाता है कि इस शुभ काल में दान करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और साधक के जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है।

मकर संक्रांति पर करें दान

मकर संक्रांति के दिन गरीबों और जरूरतमंदों को दान देना बेहद पुण्यकारी माना जाता है। इस दिन खिचड़ी का दान देना विशेष फलदायी माना गया है। इस दिन से सभी शुभ कार्यों पर लगा प्रतिबंध भी समाप्त हो जाता है। इस पर्व पर खिचड़ी सेवन और खिचड़ी दान का अत्यधिक महत्व बताया जाता है। ज्योतिषाचार्य ने बताया कि मकर संक्रांति के दिन प्रसाद के रूप में खाई जाने वाली खिचड़ी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती है। इससे पाचन क्रिया सुचारु रूप से चलने लगती है।

हंसना मना है

डॉक्टर- पप्पु अब तुम्हारी पत्नी कैसी है? पप्पु- अब काफी सुधार है उसकी तबियत में, आज सुबह तो थोड़ी बहुत लड़ाई भी की उसने।

2 हफ्तों से ज्यादा खासी टीबी बन जाती है.. अगर टाइम पे गर्लफ्रेंड ना चेंज करो तो वो बीबी बन जाती है।

गर्लफ्रेंड- मेरी याद आती है तो तुम क्या करते हो? बॉयफ्रेंड- तुम्हारी पसंदीदा चोकलेट खा लेता हूं। और तुम क्या करती हो, गर्लफ्रेंड-मैं भी 'विमल' खा लेती हूं।

दिल की बात दिल में मत रखना, जो पसंद हो उसे आईलवयू कहना, अगर वो गुस्से में आ जाये तो डरना मत, राखी निकालना और कहना, प्यारी बहना मिलती रहना।

इतनी हसीन है आप, खुद को दुनिया की नजरों से बचाया करो! आंखों में काजल लगाना काफी नहीं! गले में निंबू-मिर्ची भी लटकाया करो।

अंकल- बेटा क्या करते हो? पप्पू- अंकल मैं 'बाबू' हूं, अंकल- वाह, तुम क्लर्क हो ? पप्पू - नहीं अंकल मैं 'बाबू' हूं, अंकल- अबे तू है क्या? पप्पू - अरे अंकल, मैं 'बाबू' हूं आपकी बेटी का, आपकी बेटी मुझे हमेशा कहती है- 'मेरा बाबू' अंकल बेहोश?

कहानी | मूर्ख साधू और ठग

एक बार की बात है किसी गांव में एक साधु बाबा रहा करते थे। पूरे गांव में वह अकेले साधु थे, जिन्हें पूरे गांव से कुछ न कुछ दान में मिलता रहता था। दान के लालच में उन्होंने गांव में किसी दूसरे साधु को नहीं रहने दिया और अगर कोई आ जाता था, तो उन्हें किसी भी प्रकार से गांव से भगा देते थे। इस प्रकार उनके पास बहुत सारा धन इकट्ठा हो गया था। वहीं, एक ठग की नजर कई दिनों से साधु बाबा के धन पर थी। वह किसी भी प्रकार से उस धन को हड़पना चाहता था। उसने योजना बनाई और एक विद्यार्थी का रूप बनाकर साधु के पास पहुंच गया। उसने साधु से अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। पहले तो साधु ने मना किया, लेकिन फिर थोड़ी देर बाद मान गए और ठग को अपना शिष्य बना लिया। ठग साधु के साथ ही मंदिर में रहने लगा और साधु की सेवा के साथ-साथ मंदिर की देखभाल भी करने लगा। ठग की सेवा ने साधु को खुश कर दिया, लेकिन फिर भी वह ठग पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाया। एक दिन साधु को किसी दूसरे गांव से निमंत्रण आया और वह शिष्य के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। साधु ने अपने धन को भी अपनी पोटली में बांध लिया। रास्ते में उन्हें एक नदी मिली। साधु ने सोचा कि क्यों न गांव में प्रवेश करने के पहले नदी में स्नान कर लिया जाए। साधु ने अपने धन को एक कंबल में छुपाकर रख दिया और ठग से उसकी देखभाल करने का बोलकर नदी की ओर चले गए। ठग की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे जिस मौके की तलाश थी, वो मिल गया। जैसे ही साधु ने नदी में डुबकी लगाई ठग सारा सामान लेकर भाग खड़ा हुआ। जैसे ही साधु वापस आया, उसे न तो शिष्य मिला और न ही अपना सामान। साधु ने ये सब देखकर अपना सिर पकड़ लिया।

कहानी से सीख: हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि कभी भी लालच नहीं करना चाहिए और न ही किसी की चिकनी चुपड़ी बातों पर विश्वास करना चाहिए।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मेहमानों का आगमन होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। व्यापार में लाभ होगा। हानि संभव है।

वृषभ किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। व्यापार में वृद्धि के योग हैं।

मिथुन व्ययवृद्धि से तनाव रहेगा। बजट बिगड़ेगा। दूर से शोक समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। भागदौड़ रहेगी।

कर्क कष्ट, भय, चिंता व तनाव का वातावरण बन सकता है। जीवनसाथी पर अधिक मेहरबान होंगे। कोर्ट व कचहरी के कार्यों में अनुकूलता रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी।

सिंह तरक्की के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। आय में वृद्धि होगी। मित्रों के साथ बाहर जाने की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति के योग हैं।

कन्या यात्रा सफल रहेगी। शारीरिक कष्ट हो सकता है। बेचैनी रहेगी। नई योजना बनेगी। लोगों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब हो सकता है।

वृश्चिक कोई राजकीय बाधा हो सकती है। जल्दबाजी में कोई भी गलत कार्य न करें। विवाद से बचें। काफी समय से अटका हुआ पैसा मिलने का योग है, प्रयास करें।

धनु किसी की बातों में न आएं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। नवीन वस्त्राभूषण पर व्यय होगा। अचानक लाभ के योग हैं। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

मकर परिवार की आवश्यकताओं के लिए भागदौड़ तथा व्यय की अधिकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें।

कुम्भ जोखिम व जमानत के कार्य टालें। शारीरिक कष्ट संभव है। व्यवसाय धीमा चलेगा। आय बनी रहेगी। नौकरी में उच्चाधिकारी की नाराजी झेलनी पड़ सकती है।

मीन किसी अपरिचित की बातों में न आएं। धनहानि हो सकती है। थोड़े प्रयास से ही काम सफल रहेंगे। मित्रों की सहायता करने का अवसर प्राप्त होगा।

अब सूरज बड़जात्या की फिल्म ये प्रेम मोल लिया में हुई गोरी मेम की एंट्री

टी वी शो भाबीजी घर पर हैं की गोरी मेम यानी एक्ट्रेस सौम्या टंडन इन दिनों दर्शकों से खूब सारा प्यार बटोर रही हैं। उन्हें आदित्य धर की फिल्म धुरंधर में देखा गया, जिसमें उनके काम को काफी पसंद किया गया। सौम्या के लिए ये फिल्म उनके करियर में एक टर्निंग पॉइंट साबित हुई है।

सौम्या ने फिल्म धुरंधर में रहमान डकैत बने अक्षय खन्ना की पत्नी उल्फत का रोल प्ले किया था। फिल्म में उनके भले ही थोड़े सीन्स थे, लेकिन वो सभी ऑडियंस पर गहरा असर कर गए। अब खबर है कि सौम्या को उनके शानदार काम के चलते, सूरज बड़जात्या की आने वाली फिल्म में कास्ट कर लिया गया है।

सौम्या टंडन आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ की फिल्म ये प्रेम मोल लिया में शामिल हुई हैं। उनका फिल्म में जुड़ना कास्ट को बहुत मजबूत कर देता है। ये प्रोजेक्ट के लिए एक बड़ा और अच्छा कदम भी माना जा रहा है। हालांकि अभी तक मेकर्स की तरफ से इसकी कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है।

सौम्या टंडन पिछले काफी सालों से फिल्मों में काम कर रही हैं। साल

2007 में आई फिल्म जब वी मेट में वो करीना कपूर की बहन भी बनी थी, जिससे उन्हें काफी पहचान मिली। फिर, वो टीवी इंडस्ट्री में गईं जहां भाबीजी घर पर हैं शो ने उन्हें घर-घर में मशहूर किया। अब धुरंधर ने उनके करियर को एक नई उड़ान दी है।

डायरेक्टर सूरज बड़जात्या की फिल्में फैमिली ऑडियंस के लिए ही बनाई जाती है। उनकी नई फिल्म ये प्रेम मोल लिया कई मायनों में अलग है। क्योंकि ऑडियंस को पहली बार बड़े पर्दे पर एक नया प्रेम देखने मिलेगा। सूरज बड़जात्या की पिछली हर फिल्म में प्रेम का किरदार सलमान खान निभाते आए हैं। लेकिन इस बार आयुष्मान खुराना उनकी फिल्म में प्रेम बने हैं। आयुष्मान भी कई सारी सक्सेसफुल फिल्में दे चुके हैं। उनकी पिछली फिल्म थामा भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छी चली थी। साल 2026 एक्टर के लिए काफी खास है क्योंकि इस साल उनकी दो फिल्में रिलीज होंगी। फरवरी के महीने में वो पति, पत्नी और वो दो लेकर आ रहे हैं। वहीं इसके बाद उनकी सूरज बड़जात्या संग फिल्म आएगी, जिसकी रिलीज डेट जल्द अनाउंस होगी।

प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ को मैनेज करने के लिए चित्रांगदा ने लिया था एक्टिंग से ब्रेक

चित्रांगदा सिंह बॉलीवुड की उन एक्ट्रेसेस में से हैं, जिन्होंने अपनी खूबसूरती और दमदार अदाकारी से कम फिल्मों में ही खास पहचान बनाई। करियर के पीक पर होने के बावजूद उन्होंने एक्टिंग से दूरी बना ली थी, जिससे फैंस हैरान रह गए थे। हाल ही में एक बातचीत के दौरान चित्रांगदा सिंह ने अपने इस ब्रेक को लेकर खुलकर बात की।

दरअसल, हाल ही में यूट्यूबर कमिया जानी, जो कर्ली टेल्स नाम से अपना यूट्यूब चैनल चलाती हैं, चित्रांगदा सिंह के घर पहुंचीं। इस दौरान एक्ट्रेस ने उन्हें अपने खूबसूरत घर का टूर कराया और कई निजी व प्रोफेशनल बातों पर खुलकर बातचीत की। इसी बातचीत के दौरान चित्रांगदा सिंह से यह सवाल भी पूछा गया कि उन्होंने एक्टिंग से इतना लंबा ब्रेक क्यों लिया था। चित्रांगदा सिंह ने बातचीत के दौरान बताया कि उस समय वह शादीशुदा थीं और उनकी जिंदगी में कुछ पारिवारिक परिस्थितियां थीं। एक्ट्रेस ने कहा कि उस वक्त उन्हें लगा कि परिवार को प्रायोरिटी देना ज्यादा जरूरी है। उन्होंने माना कि उस दौर में वह प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ को एक साथ मैनेज नहीं कर पा रही थीं, इसलिए उन्होंने एक्टिंग से ब्रेक लेने का फैसला किया।

इसके बाद उनसे पूछा गया कि जब उस दौरान उन्हें काम के ऑफर आते थे, तो कितना मुश्किल हो जाता था काम को मना करना, इस पर चित्रांगदा ने बताया, उन्होंने अपना फोन नंबर ही बदल दिया था, ताकि कोई भी उनसे संपर्क न कर सके।

एक्ट्रेस ने कहा कि उनके लिए यह काम को मना करने का सबसे आसान तरीका था।

बॉलीवुड | मन की बात

दिमागी संतुलन बनाए रखने के लिए मैं थेरेपीज पर डिपेंड रहती थी : पार्वती

साउथ एक्ट्रेस पार्वती थिरुवोथु ने अपना दर्दनाक एक्सपीरियंस शेयर किया है। पार्वती दो बार नेशनल अवॉर्ड जीत चुकी हैं। लेकिन उनके जीवन का एक लंबा दौर रहा है जब वो दिमागी संतुलन बनाए रखने के लिए थेरेपीज पर डिपेंड रहती थीं। एक्ट्रेस बताती हैं कि वो अकेलेपन के लंबे दौर से जूझ चुकी हैं, लेकिन उन्हें उस ट्रॉमा से निकालने के लिए कोई अच्छा थेरेपिस्ट नहीं मिला। उन्होंने अपनी मेंटल सिचुएशन का हाल ही में खुलासा किया। पार्वती पंकज त्रिपाठी के साथ कड़क सिंह में भी कर चुकी हैं। एक्ट्रेस ने अपनी पर्सनल लाइफ का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि सही थेरेपिस्ट ढूंढने में उन्हें काफी वक्त लगा और कई बार ट्रायल-एंड-एरर से गुजरना पड़ा। पार्वती ने कहा कि थेरेपी शुरू करने का फैसला उनकी जिंदगी के सबसे अच्छे फैसलों में से एक रहा, लेकिन गलत थेरेपिस्ट मिलने से जख्म और गहरे भी हो सकते हैं। पार्वती ने कहा- जब तक मुझे मेरा मौजूदा थेरेपिस्ट नहीं मिला, तब तक मुझे कई खराब थेरेपिस्ट झेलने पड़े। मेरे लिए ऐसा थेरेपिस्ट ढूंढना मुश्किल था जो मुझे एक पब्लिक फिगर की तरह न देखे। मेरा पहला थेरेपिस्ट अमेरिका में था, इसलिए सेशन्स रात 1-2 बजे होते थे। कुछ देसी थेरेपिस्ट, जिनमें रेड फ्लैग्स होते हैं, हालात और बिगाड़ देते हैं क्योंकि वे हमारी संस्कृति की कमजोर नसों को अच्छी तरह जानते हैं और वहीं दबाव डालते हैं। आखिरकार, यह सब बहुत दर्दनाक होता है। अपनी जिंदगी के एक अंधेरे दौर के बारे में बात करते हुए पार्वती ने कहा- एक समय मैं बहुत अकेली थी। दोस्तों से कहती रहती थी कि नए-नए थेरेपिस्ट ट्राय कर रही हूं, लेकिन कुछ काम नहीं कर रहा था। मुझे लगने लगा था कि मैं मदद से बाहर हूं। हालात बहुत खराब हो गए थे। आत्महत्या के ख्याल बहुत ज्यादा आने लगे थे। 2021 के जनवरी-फरवरी के महीने मुझे अब याद ही नहीं, सब धुंधला है। फोन की गैलरी देखती हूं, तभी याद आता है कि तब क्या-क्या हुआ था। इसके बाद ही थेरेपी ने मेरे लिए काम करना शुरू किया।

ना कोई मजबूत सेना, ना ही कोई खतरनाक हथियार फिर भी तृतीय विश्वयुद्ध में सुरक्षित रहेगा ये देश!

दुनिया इस समय युद्ध की मार झेल रहा है। कभी रूस-यूक्रेन के बीच युद्ध चिढ़ जाता है तो कभी अमेरिका किसी देश पर अटैक कर देता है। अभी तक दुनिया से दो विश्व यद्ध देखे हैं। मौजूद हालातों को देखते हुए तीसरे विश्व युद्ध के छिड़ने की भी संभावना जताई जा रही है। इतिहास में भी एक देश दूसरे को गुलाम बनाकर उसे अपने कब्जे में लेने की कोशिश करते रहे हैं। खुद भारत ने भी अंग्रेजों की गुलामी झेली है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया में एक ऐसा देश है, जो आजतक किसी का गुलाम नहीं बना। चाहे तीसरा विश्व युद्ध छिड़ जाए, ये वो देश होगा, जिसपर इसका असर ना के बराबर ही पड़ेगा। देश की भौगौलिक स्थिति भी ऐसी है कि इसपर कोई भी देश अटैक करने से पहले सोचेगा। हम बता कर रहे हैं भूटान की। ये छोटा सा देश इस बात का उदाहरण है कि छोटा होना कमजोरी नहीं है। हिमालय की गोद में बसा वो छोटा-सा साम्राज्य, जिसे थंडर ड्रैगन का देश भी कहते हैं। भूटान दुनिया के उन चुनिंदा देशों में से एक है जो कभी किसी विदेशी ताकत का गुलाम नहीं बना। ना ब्रिटिश, ना मुगल और ना कोई और इसे कब्जे में ले सका। इसके पीछे वजह है इसकी कठिन पहाड़ी भूगोल, प्राकृतिक किले जैसी हिमालय की चोटियां और सदियों से चली आ रही अलग-थलग नीति। भूटान की सबसे बड़ी ताकत है उसकी भौगोलिक स्थिति। चारों तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और घने जंगल, जो किसी भी आक्रमण को नामुमकिन बना देते हैं। ये प्राकृतिक रक्षा प्रणाली है, जो इसे युद्धों से दूर रखती है। साथ ही, भूटान ने हमेशा राजनीतिक तटस्थता अपनाई है। वो किसी बड़े गठबंधन या युद्ध में शामिल नहीं होता। इस देश की सबसे अनोखी बात ये है कि यहां सकल राष्ट्रीय खुशी को GDP से ज्यादा महत्व दिया जाता है। 1970 के दशक में भूटान के चौथे राजा जिग्मे सिंगये वांगचुक ने ये विचार दिया कि विकास का मकसद सिर्फ पैसा नहीं, बल्कि लोगों की खुशी, पर्यावरण, संस्कृति और शांति है, यही वजह है कि भूटान दुनिया का पहला कार्बन नेगेटिव देश है। 70 प्रतिशत से ज्यादा भूमि जंगल है और संविधान में 60प्रतिशत भूमि हमेशा संरक्षित रहेगी। यहां कोई बड़ा सैन्य महत्व नहीं है। ना कोई बड़े बेस, ना रणनीतिक तेल/गैस। पड़ोसी भारत और चीन के बीच होने के बावजूद, वो तटस्थ रहता है और दोनों से अच्छे रिश्ते रखता है।

अजब-गजब | भारत ने 1961 में सैन्य कार्रवाई करके इसे अपने देश का हिस्सा बनाया

भारत का वो इकलौता राज्य, जो कभी नहीं बना अंग्रेजों का गुलाम

भारत का इतिहास, विरासत और संस्कृति बहुत समृद्ध और शानदार रही है। अपने प्राकृतिक संसाधनों, विशाल बाजार, व्यापार के मौकों और अपनी रणनीतिक जगह की वजह से भारत सदियों से विदेशी ताकतों को अपनी ओर खींचता रहा है। खासकर यूरोपीय देशों ने भारत को अमीरी का खजाना समझा और यहां अपना कब्जा जमाने की कोशिश की। इसी क्रम में ब्रिटिश लोगों ने भारत को अपना उपनिवेश बना लिया और करीब दो सौ साल तक राज किया। हालांकि, पूरा भारत ब्रिटिश दबाव में आ गया, लेकिन एक इलाका ऐसा था जो पूरी तरह से उनके शासन से बाहर रहा- और ये बात बड़ी खास है।

धीरे-धीरे अपनी राजनीतिक और सैन्य ताकत बढ़ाते गए। उस समय के भारतीय राजाओं के आपसी झगड़े और लोगों में फैली नाराजगी का उन्होंने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया। नतीजा ये हुआ कि कई राज्य ब्रिटिश नियंत्रण में चले गए। संसाधनों की लूट, ज्यादा कर और अन्यायपूर्ण शासन से भारत को भारी नुकसान हुआ। लेकिन इतने लंबे और व्यापक शासन के बावजूद भी ब्रिटिश लोग एक खास इलाके पर कब्जा करने में नाकाम रहे।

वो इलाका था गोवा। भारत के इतिहास में गोवा वह इकलौती जगह बना रहा जिस पर

ब्रिटिश कभी राज नहीं कर पाए। ऐसा नहीं कि ये जगह गरीब या महत्वहीन थी। आज भी गोवा अपने प्राकृतिक नजारों, खूबसूरत बीच, अलग संस्कृति और पर्यटन के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। व्यापारिक और रणनीतिक नजरिए से भी गोवा बहुत अहम इलाका था। फिर भी, वो ब्रिटिश शासन से दूर रहने में कामयाब रहा।

इसकी सबसे बड़ी वजह थी पुर्तगालियों का पहले से मौजूद होना। ब्रिटिश लोगों से काफी पहले 1498 में वास्को डी गामा भारत पहुंच गया था। उसके बाद पुर्तगालियों ने गोवा को अपना मुख्य केंद्र बना लिया। उन्होंने वहां व्यापार के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था भी कायम की और गोवा पर मजबूत पकड़ बना ली। इस वजह से जब ब्रिटिश लोग भारत आए, तब तक गोवा पुर्तगालियों के कब्जे में था। इसके बाद सन् 1608 में ब्रिटिश लोग सूरत पहुंचने के बाद भारत के अलग-अलग हिस्सों में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करने लगे। इस दौरान ब्रिटिश और पुर्तगालियों के बीच व्यापार और राजनीति की होड़ भी चलती रही। कई बार झड़पें हुईं, लेकिन पुर्तगाली गोवा छोड़ने को तैयार नहीं थे। अपने नौसेना बल और प्रशासनिक नियंत्रण से वे गोवा को बचाने में कामयाब रहे। नतीजतन, ब्रिटिश लोग कभी भी गोवा पर कब्जा नहीं कर पाए।

1947 में भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिल गई, लेकिन गोवा अभी भी पुर्तगालियों के अधीन ही रहा। ब्रिटिश लोग देश छोड़कर चले गए, पर पुर्तगालियों ने गोवा को अपना उपनिवेश बनाए रखा। इतिहास के मुताबिक, पुर्तगाली शासन गोवा में लगभग 400 साल तक चला। आखिरकार 1961 में भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई करके गोवा को भारत में मिला लिया। उसके बाद गोवा भी आजाद भारत का हिस्सा बन गया।

भाजपा की नीति इस्तेमाल करो और फेंको

उद्धव बोले- भाजपा की विचारधारा अब गुंडे और चोर प्रथम में बदली

» शिवसेना (उबाठा) प्रमुख ने मौजूदा राज्य सरकार को बताया अब तक की सबसे बेशर्म सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शिवसेना (उबाठा) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि उसकी राष्ट्र प्रथम विचारधारा अब गुंडे और चोर प्रथम में बदल गई है। ठाणे में राज ठाकरे के साथ एक संयुक्त रैली में उन्होंने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर भाजपा द्वारा इस्तेमाल करो और फेंको नीति अपनाने का आरोप लगाया। ठाकरे ने भारतीय जनता पार्टी पर भाषाई और धार्मिक आधार पर माहौल बिगाड़ने का आरोप लगाया। ठाणे में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे के साथ एक संयुक्त रैली को संबोधित करते हुए उद्धव ने कहा कि वह पुरानी भाजपा मर चुकी है'' जो राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखती थी।

उन्होंने जोर देकर कहा कि मुंबई और ठाणे के अगले महापौर केवल महाराष्ट्रीयन होंगे। अपने प्रतिद्वंद्वी और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर उन्हीं के गृहक्षेत्र में निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा शिंदे का इस्तेमाल करो और फेंको की नीति अपनाएगी।

उद्धव ने कहा, हम मोदी या भाजपा के नहीं, बल्कि देशभक्त और महाराष्ट्र के भक्त हैं। उन्होंने लोगों से शिवसेना (उबाठा)-मनसे गठबंधन को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि यह चुनाव जीवन की दिशा तय करने वाला है। उद्धव ने मौजूदा राज्य सरकार को अब तक की सबसे बेशर्म सरकार बताते हुए कहा कि प्रदूषण और कुप्रबंधन के कारण मुंबई-ठाणे कचरे के ढेर में बदल गए हैं। इससे पहले, राज ठाकरे ने उद्योगपति गौतम अदाणी और केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि अदाणी समूह ने देश के हवाई अड्डों और बंदरगाहों पर बंदूक की नोक पर कब्जा किया है। भाजपा द्वारा अदाणी के साथ उनकी तस्वीर साझा करने पर पलटवार करते हुए राज ने कहा, 'मेरे घर रतन टाटा और मुकेश अंबानी भी आए हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं किसी के पाप छुपाऊंगा। जब मुंबई और ठाणे खतरे में होंगे, तो मैं दोस्ती की परवाह नहीं करूंगा।

भाजपा मुंबई और उसके पड़ोसी शहरों को गुजरात से जोड़ना चाहती है: राज ठकरे

राज ठाकरे ने आरोप लगाया कि भाजपा मुंबई और उसके पड़ोसी शहरों को गुजरात से जोड़ना चाहती है। उन्होंने गुजराती समुदाय से भी इस साजिश का विरोध करने की अपील की। राज ने कहा, हम दूसरी भाषाओं के विरोधी नहीं हैं, लेकिन अगर हमारे घर में हमें डराया गया, तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। दोनों भाइयों ने एकनाथ शिंदे और भाजपा पर चुनावों में पैसे के बल पर विरोधियों को खरीदने का आरोप लगाया।

एनसीपी के बिना नहीं बनेगा मेयर : मलिक

राष्ट्र वादी कांग्रेस पार्टी के नेता नवाब मलिक ने आगामी बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) चुनावों में पार्टी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए दावा किया कि अन्यथा त्रिशंकु विधानसभा में पार्टी ही बहुमत तय करेगी। एएनआई से बात करते हुए नवाब मलिक ने कहा कि मैं शुरू से ही कह रहा हूं कि बीएमसी में त्रिशंकु विधानसभा होगी और एनसीपी की मदद के बिना कोई महापौर नहीं चुना जा सकेगा। इसलिए अगर कोई सोचता है कि चुनाव परिणाम बदलेगा, तो वह गलतफहमी में है। पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम की तरह शरद पवार के गुट के साथ नहीं, बल्कि अकेले बीएमसी चुनाव लड़ने के बारे में पूछे जाने पर नवाब मलिक ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं की इच्छा थी कि वे अकेले चुनाव लड़ें। दोनों एनसीपी का विलय जब भी होगा, पवार साहब (शरद पवार) और अजीत दादा (अजित पवार) इस पर फैसला लेंगे। मैं विलय के समय पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा, लेकिन यह निश्चित है कि दोनों गुटों के कार्यकर्ता इच्छुक हैं और उम्मीद करते हैं कि दोनों एनसीपी एक साथ आएं। अंबरनाथ और अकोला में क्रमशः कांग्रेस और एआईएमआईएम के साथ भाजपा के हालिया गठबंधन पर नवाब मलिक ने सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी, जिसमें एनसीपी भी शामिल है, की आलोचना की। उन्होंने कहा,अकोट (अकोला) में भाजपा ने एआईएमआईएम के साथ गठबंधन करके इस बात को पुष्ट किया है कि भाजपा एआईएमआईएम को अपनी बी टीम के रूप में इस्तेमाल कर रही है। इसी तरह, अंबरनाथ में भी भाजपा ने कांग्रेस पार्षदों को अपने साथ लिया, लेकिन हमने एनसीपी का समर्थन करना चुना। भाजपा, जो कांग्रेस-मुक्त भारत का दावा करती है, लेकिन उन्हीं कांग्रेस पार्षदों का समर्थन ले रही है।

दूसरे वनडे कल, जीत के इरादे से उतरेगा भारत

» न्यूजीलैंड से पहला वनडे जीतकर 1-0 की है बढ़त

» सीरीज से बाहर हुए वॉशिंगटन सुंदर, आयुष बडोनी को मिला मौका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

राजकोट। मेजबान भारतीय क्रिकेट टीम और मेहमान न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के बीच चल रही तीन वनडे मैचों की सीरीज का आगाज शानदार अंदाज में हुआ है। अब बारी है भारत-न्यूजीलैंड दूसरे वनडे मैच की। जहां टीम इंडिया सीरीज जीतने के इरादे से उतरेगी। जो नए साल में भारत की पहली सीरीज जीत भी बन जाएगी। भारत और न्यूजीलैंड के बीच अगला मुकाबला बहुत दिलचस्प होने वाला है क्योंकि दोनों ही टीमें अपना पूरा जोर लगाने वाली है।

अगर टीम इंडिया जीती तो उसके पास 2-0 की अजेय बढ़त आ जाएगी। जबकि न्यूजीलैंड को अगर सीरीज में बने रहना है तो उसे ये मैच जीतकर सीरीज को 1-1 की बराबरी पर लाना होगा। वहीं न्यूज़ीलैंड के खिलाफ चल रही वनडे सीरीज के बीच भारतीय टीम को बड़ा झटका लगा है। ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर चोट के कारण शेष दो वनडे मैचों से बाहर हो गए हैं। चोट लगने के बाद सुंदर ने केवल पांच ओवर ही गेंदबाजी की और इसके बाद मैदान छोड़ना पड़ा। बीसीसीआई ने बताया कि सुंदर की चोट की आगे स्कैन जांच की जाएगी, जिसके बाद मेडिकल टीम विशेषज्ञों की राय लेगी। इसके साथ ही न्यूज़ीलैंड के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज में उनकी उपलब्धता भी संदेह में है। इस बीच, चयन समिति ने वॉशिंगटन सुंदर के स्थान पर आयुष बडोनी को टीम में शामिल किया है। बडोनी दूसरे वनडे से पहले राजकोट में टीम से जुड़ेंगे। यह बडोनी का वनडे टीम में पहला मौका है।

किंग कोहली की होगी वर्ल्ड रिकॉर्ड पर नजर

विराट कोहली न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाने की दहलीज पर खड़े हैं। कोहली के पास कीवी टीम के विरुद्ध सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले दुनिया के एकमात्र बल्लेबाज बनने का सुनहरा मौका है। फिलहाल वह संयुक्त रूप से तीन बल्लेबाजों के नाम दर्ज है। वीरेंद्र सहवाग, रिकी पोंटिंग और विराट कोहली, तीनों ने ही न्यूजीलैंड के खिलाफ 6-6 शतक जड़े हैं। सहवाग ने अपने करियर में न्यूजीलैंड के खिलाफ 23 मैचों की 23 पारियों में कुल 1157 रन बनाए, वहीं पोंटिंग ने 51 मैचों की 50 पारियों में 1971 रन बनाए। वहीं, विराट कोहली ने अब तक न्यूजीलैंड के खिलाफ 34 मैचों की 34 पारियों में 1750 रन बनाए हैं। कोहली का सर्वोच्च स्कोर नाबाद 154 रन है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनका औसत 56.45 है, जो कि तीनों बल्लेबाजों में सर्वश्रेष्ठ है।

सीएम के वार्ड में ही आ रहा गंदा पानी

» आम जनता का क्या होगा हाल

» 15 दिनों से घरों में आ रहा सीवर मिला पानी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के जोन-1 अंतर्गत नई बस्ती, क्ले स्क्वायर और बर्फखाना इलाके में बीते 15 दिनों से घरों में गंदा और बदबूदार पानी सप्लाई हो रहा है। हालात इतने खराब हैं कि लोग पीने के पानी के लिए तरस गए हैं, लेकिन जलकल विभाग की नींद नहीं टूट रही। स्थानीय लोगों ने बताया कि गंदा पानी आने से बीमारियों का खतरा बढ़ गया है, बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं सबसे ज्यादा परेशान हैं। कई घरों में पीने का पानी बाहर से मंगाना पड़ रहा है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि यह इलाका मुख्यमंत्री के वार्ड के अंतर्गत आता है, इसके बावजूद जलकल विभाग पूरी तरह फेल नजर आ रहा है।

जनता का सवाल है—जब मुख्यमंत्री के वार्ड में गंदा पानी आ रहा है। जब पार्षद की भी कोई सुनवाई नहीं हो रही। तो बाकी लखनऊ का क्या हाल होगा? स्थानीय निवासियों का कहना है कि शिकायतें करने के बावजूद कोई अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचा, न पाइपलाइन की जांच हुई और न ही समस्या का स्थायी समाधान निकाला गया। इंदिरा नगर मायावती कॉलोनी के दीनदयाल पुरम में दूषित पानी से जनता बेहाल है। जीएम जलकल जोन 7 के अधिकारियों की लापरवाही से दर्जनों लोग गंदा पानी पीने के चलते बीमार हो गए है। जलकल विभाग के अधिकारी आंख मूंदे बैठे हैं।200 से ज्यादा घरों में बदबूदार गंदा पानी आ रहा है। कालोनी वासियों में भारी आक्रोश सड़क पर उतर कर हाथ में गंदा पानी लेकर सड़क पर विरोध किया। इंदौर में हुए हादसे से जलकल विभाग ने सबक नही लिया और नगर निगम जलकल विभाग लखनऊ में बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है।

इंदिरा नगर में दूषित पानी से हाहाकार मचा

7 साल से चिल्ला रहा हूं, कोई सुनने वाला नहीं : पार्षद अमित

भाजपा पार्षद अमित चौधरी ने जलकल विभाग पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि मैं पिछले 7 साल से इस समस्या को लेकर लगातार शिकायत कर रहा हूं, लेकिन जलकल जीएम से लेकर अधिकारी तक फोन तक नहीं उठाते। मेरी कोई सुनने वाला नहीं है। क्या जलकल विभाग इंदौर जैसी किसी बड़ी घटना का इंतजार कर रहा है? क्या अधिकारी किसी बड़े हादसे के बाद ही जागेंगे।

मानसिक संतुलन खो चुके हैं गिरिराज सिंह

» मंत्री के विवादित बयान पर राजद व कांग्रेस ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। अपने बयानों से हमेशा चर्चा में रहने वाले केंद्रीय मंत्री और भाजपा के कद्दावर नेता गिरिराज सिंह एक बार फिर विवादों के घेरे में हैं। दरअसल, गिरिराज सिंह घुसपैठ और जनसंख्या नियंत्रण के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने विपक्षी गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कुछ लोग वोट बैंक की राजनीति के लिए देश की सुरक्षा से समझौता कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिस तरह सूअर की आबादी बढ़ती है, वैसी ही स्थिति कुछ इलाकों में पैदा की जा रही है। इस बयान पर विपक्षी दलों ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस ने इसे समाज को बांटने वाली राजनीति करार दिया है।

कन्हैयालाल के परिवार के साथ भाजपा ने किया धोखा : गहलोत

» अमित शाह के राजस्थान दौरे पर पूर्व सीएम का निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के राजस्थान दौरे पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने निशाना साधा है। पूर्व मुख्यमंत्री ने चुनावों के दौरान कन्हैयालाल के परिवार को मुआवजे को लेकर भाजपा नेताओं पर झूठ फैलाने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि कन्हैयालाल के परिवार ने खुद स्पष्ट किया है कि उन्हें कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में 50 लाख रुपये का मुआवजा और दोनों बेटों को सरकारी नौकरी दी गई थी, जो भाजपा नेताओं के दावों के विपरीत है।

इसके साथ ही गहलोत ने इस मुद्दे पर राजस्थान की जनता को गुमराह करने के लिए भाजपा से माफी की मांग की। उन्होंने गृह मंत्री से पूछा कि इस हत्याकांड की एनआईए के द्वारा होने के बावजूद परिवार को अब तक न्याय क्यों नहीं मिला। गहलोत ने कहा कि शाह को अपनी राजनीतिक चुप्पी तोड़नी चाहिए। उन्हें बताना चाहिए कि कन्हैयालाल के परिवार को न्याय कब मिलेगा।

नीलांश के अवैध कब्जे से कराह रही गोमती

- दीवार बनाकर मोड़ दी गई जलधारा
- बिल्डर्स पर है नदी में अतिक्रमण का आरोप
- राष्ट्रपति व पीएम से नदी को बचाने की गुहार
- मामला कोर्ट में लंबित लोगों में आक्रोश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अभी हाल ही अरावली पर्वत श्रृंखला की अवैध कटान को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र व राज्य सरकारों को फटकार के साथ ही अपने फैसल को भी प्रकृति को बचाने के लिए पलट दिया था। पर यूपी सरकार व यहां के प्रशासन को जैसे प्राकृतिक रचनाओं से कोई लगाव ही नहीं है। ऐसा इसलिये कह रहे हैं कि राज्य की राजधानी लखनऊ की जीवनदायिनी गोमती की धारा को दीवार के सहारे रोककर मोड़ दिया गया है। ये काम किसी सरकारी संस्था ने नहीं प्राईवेट बिल्डर्स ने ये शर्मनाक कृत किया है। अब इसके खिलाफ आवाज उठने लगी है। वहां के लोगों ने इसकी शिकायत देश के राष्ट्रपति,पीएम, मुख्य न्यायाधीश, राज्यपाल, प्रदेश के संबंधित मंत्रियों व प्रमुख सचिवों को भेजी है।

बता दें गोमती नदी व तालाबों की भूमि के बड़े भाग पर नीलांश बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी व उसके मालिकों द्वारा दिवार अवैध कब्जे व किया गया है। यहां पर सार्वजनिक भूमि पर अवैध कब्जा व अतिक्रमण करके लगभग 10 वर्षों से वाटर पार्क के रूप में व्यावसायिक उपयोग किया जा रही है। इससे अकूत अवैध काली कमाई की जा रही है। प्रार्थी दीपक शुक्ला उर्फ तिरंगा महाराज ने इसकी शिकायत की है।

नीलांश थीम वाटर पार्क विकसित

नीलांश बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी, रजि कार्यालय- फ्लैट नंबर-बी, 93एन, ग्राउंड फ्लोर, पिंकी अपार्टमेंट, डालीबाग, लखनऊ व उसके मालिकों संतोष श्रीवास्तव, सतीश श्रीवास्तव, राजेश श्रीवास्तव व मदन लाल द्वारा तहसील- मलिहाबाद के ग्राम बदैया व टिकरीकला तथा तहसील- बख्शी का तालाब के ग्राम-यकडरियाकला में स्थित गोमती नदी के बिल्कुल किनारे पर नीलांश थीम वाटर पार्क विकसित किया गया है तथा गांव बदैया के एक बड़े क्षेत्र में विभिन्न आवासीय योजना चलाकर रो हाउस, विला और आवासीय भूखंड का बड़े पैमाने पर क्रय-विक्रय किया जा रहा है।

कई बार शिकायत की पर नहीं हुई सुनवाई

नीलांश कम्पनी व उसके मालिकों द्वारा गोमती नदी की भूमि और तालाबों पर किये गए अवैध कब्जे व अतिक्र मण के संबंध में प्रार्थी द्वारा सम्बन्धित दोनों तहसीलों के राजस्व अधिकारियों व जिला स्तर पर उच्चाधिकारियों के समक्ष प्रार्थी द्वारा कई शिकायतें की गई । प्रार्थी के काफी प्रयास के पश्चात उच्चाधिकारियों के निर्देश पर सम्बन्धित तहसील के उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, क्षेत्रीय लेखपाल, राजस्व निरीक्षक आदि राजस्व अधिकारियों द्वारा कई बार मौके पर जांच पड़ताल भी की गई, जिसमे नीलांश कम्पनी व उसके मालिकों द्वारा गोमती नदी व तालाबों की भूमि पर अवैध कब्जा व अतिक्रमण किया जाना पाया गया । गोमती नदी व तालाबों की भूमि पर किये गए अवैध कब्जे/अतिक्रमण के सम्बन्ध में सम्बन्धित तहसील के राजस्व अधिकारियों की जाँच-आख्यायें भी आई।

मलिहाबाद व बख्शी का तालाब में है कब्जा

उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी लखनऊ की तहसील- मलिहाबाद के अंतर्गत ग्राम-बदैया की भूमि गाटा सं0- 971 रकबा 0.6450, गाटा सं0- 995 रकबा 0.5820 हेक्टेयर, गाटा संख्या- 996 रकबा 0.0130 हेक्टेयर, गाटा संख्या-1055 रकबा 0.076 हेक्टेयर, गाटा संख्या-1056 रकबा 0.2020 हेक्टेयर, गाटा संख्या 1081 रकबा 1.1630 हेक्टेयर, गाटा संख्या 1022 रकबा 3.705 हेक्टेयर व ग्राम-टिकरीकलां की भूमि गाटा संख्या-186 रकबा 0.2530 हेक्टेयर, गाटा संख्या-193 रकबा 0.152 हेक्टेयर, गाटा संख्या 243 रकबा 0.0630 हेक्टेयर तथा तहसील- बख्शी का तालाब के अन्तर्गत ग्राम-यकडरियाकलां में खाता संख्या-01848 की भूमि राजस्व अभिलेखों मगोमती नदी व तालाब के नाम से दर्ज हैं। गोमती नदी व तालाबों की उपरोक्त सार्वजनिक भूमि से सम्बन्धित खेतौनी की प्रतियां इस प्रार्थना पत्र के साथ संलग्नक संख्या-1 के रूप में संलग्न है।

बेदखली वाद भी दर्ज

प्रार्थी की शिकायत पर गोमती नदी और तालाबों की भूमि पर अवैध कब्जा व अतिक्र मण के कारण नीलांश कम्पनी व उसके मालिको के विरुद्ध उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता-2006 की धारा 67 के अंतर्गत तहसील- मलिहाबाद व बख्शी का तालाब के राजस्व न्यायालयों में कार्यवाही की गई और तहसील आख्याओं के आधार पर इन लोगों के खिलाफ बेदखली वाद भी दर्ज किया गया है। जो कि कम्प्यूटरीकृत वाद संख्या-201910460103098 (गाँव सभा बनाम नीलांश प्रोपर्टीज द्वारा निदेशक संतोष श्रीवास्तव), 201910460103096 (गाँव सभा बनाम नीलांश प्रोपर्टीज द्वारा निदेशक संतोष श्रीवास्तव), 202010460100371

दयानिधि मारन के बयान पर घमासान

- डीएमके सांसद ने कहा- उत्तरी राज्यों में लड़कियों से अक्सर घर पर रहकर घरेलू काम ही करवाते हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। डीएमके सांसद दयानिधि मारन ने मंगलवार को यह दावा करके बहस छेड़ दी कि उत्तरी राज्यों में लड़कियों से अक्सर घर पर रहकर घरेलू काम करने की उम्मीद की जाती है,जबकि तमिलनाडु में लड़कियों को पढ़ाई करने और करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

कायद-ए-मिल्लत सरकारी महिला महाविद्यालय में छात्राओं को संबोधित करते हुए मारन ने तमिलनाडु को भारत का सर्वश्रेष्ठ राज्य बताया और मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की प्रशंसा की। मारन ने कहा कि तमिलनाडु भारत का सर्वश्रेष्ठ राज्य है और एमके स्टालिन भारतीय राज्यों में सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री हैं। यह द्रविड़ आदर्श सरकार है और हमारे पेरियार ने ही हमारे राज्य में द्रविड़वाद को प्रज्वलित किया था। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर जोर दिया था और हमारे मुख्यमंत्री उन्हीं सिद्धांतों पर काम कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारी छात्राओं को गर्व होना चाहिए और हमें उन पर गर्व है। इसीलिए हम चाहते हैं कि हमारी बेटियां पढ़ें। उत्तर भारतीय राज्यों में लड़कियों को नौकरी करने से मना किया जाता है, उन्हें घर में रहकर घरेलू काम करने के लिए कहा जाता है, लेकिन हम चाहते हैं कि हमारी बेटियां पढ़ें। राज्य के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने आज उलगम उंगल कैयिल योजना के तहत कायद-ए-मिल्लत सरकारी महिला महाविद्यालय की छात्राओं को लैपटॉप वितरित किए। उन्होंने छात्राओं की सामाजिक जिम्मेदारी की सराहना की और महाविद्यालय के लंबे इतिहास और बालिका शिक्षा में योगदान को रेखांकित किया। छात्राओं को संबोधित करते हुए स्टालिन ने कहा, आज मुझे आप सभी छात्राओं को लैपटॉप वितरित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। आप सभी को नव वर्ष और पोंगल की हार्दिक शुभकामनाएं। अक्सर कहा जाता है कि शिक्षा पूरी करने के बाद लड़कियां समाज में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। हमें अपनी सभी छात्राओं पर गर्व है। इस शिक्षण संस्थान का समृद्ध इतिहास है।

राज्यों को सुप्रीम आदेश

कुत्ते के काटने पर मुआवजा देंगी राज्य सरकारें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर समेत देश के कई शहरों में कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ रहा है। आज (13 जनवरी 2026) सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर इस मामले पर सुनवाई के दौरान बड़ा फैसला लिया है। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कुत्ते के काटने पर मुआवजा देने का आदेश दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर कोई बच्चा या बुजुर्ग कुत्ते के काटने से जख्मी हो जाता है या उसकी मौत हो जाती है, तो राज्य सरकारें उसे मुआवजा देगी।

सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस विक्र म नाथ ने मामले पर पर सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि कुत्तों को खाना खिलाने वाले लोग इस घटना के जिम्मेदार होंगे। जस्टिस विक्र म ने कहा, एक काम करो, कुत्तों को अपने घर लेकर जाओ। उन्हें इधर-उधर भटकने के लिए क्यों छोड़ा जाए? जिससे कुत्ते लोगों को डराते और काटते हैं। सर्वोच्च न्यायालय की ये टिप्पणी वरिष्ठ अधिवक्ता मेनका गुरुस्वामी की दलीलों के बाद आई, जिसमें उन्होंने कहा था कि आवारा कुत्तों का मामला एक भावुक मुद्दा है। सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाते हुए कहा,ये भावुकता सिर्फ कुत्तों के लिए ही दिखाई पड़ती है। इसके जवाब में मेनका ने कहा, ये बात नहीं है, हमें लोगों की भी उतनी ही चिंता है। बता दें कि कुत्ते के काटने के बढ़ते मामलों को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 7 नवंबर 2025 को सभी शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों, बस स्टैंड, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स और रेलवे स्टेशनों से आवारा कुत्तों को हटाने का आदेश दिया था। वहीं, कोर्ट ने सरकारी और सार्वजनिक स्थानों में कुत्तों को प्रवेश न देने के लिए कहा था। सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश का कई लोगों ने विरोध किया था।

राज्य सरकारों की अर्थव्यवस्था एक नाजुक दौर में: जयराम रमेश

- केंद्रीय बजट को लेकर कांग्रेस ने व्यक्त की चिंता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने आगामी केंद्रीय बजट को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए चेतावनी दी कि संसद के अगले सत्र की तैयारियों के बीच राज्य सरकारें और व्यापक अर्थव्यवस्था एक नाजुक दौर में प्रवेश कर रही हैं। संसदीय कार्यक्र म की घोषणा के बाद एक्स पर एक पोस्ट में रमेश ने कहा कि वित्त वर्ष 2026-27 का केंद्रीय बजट लगभग 20 दिनों में पेश किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि बजट में अनिवार्य रूप से 16वें वित्त आयोग की सिफारिशें शामिल होंगी, जिसने 17 नवंबर, 2025 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। रमेश ने कहा कि ये सिफारिशें 2026-27 से 2031-32 तक की अवधि को कवर करती हैं और केंद्र और राज्यों के बीच कर राजस्व के बंटवारे के साथ-साथ राज्यों के बीच इस राजस्व के वितरण से संबंधित हैं। राज्य सरकारों में बढ़ती बेचैनी को उजागर करते हुए, कांग्रेस नेता ने वीबी-जी आरएएम जी अधिनियम, 2025 में नए लागत-साझाकरण फार्मूले की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारें नए कानून में लागू 60:40 के लागत-साझाकरण फार्मूले से पहले से ही बहुत चिंतित हैं, जो एमजीएनआरईजीए को खत्म कर देगा। उन्होंने आगे कहा कि बजट नजदीक आने के साथ ही वे और भी ज्यादा आशंकाओं के साथ चिंतित होंगी। रमेश ने भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मौजूद तीन प्रमुख चुनौतियों का भी जिक्र किया। उनके अनुसार, कर कटौती और मजबूत लाभ मार्जिन के बावजूद निजी कंपनियों का निवेश सुस्त बना हुआ है; घरेलू बचत दरें तेजी से गिरी हैं, जिससे निवेश क्षमता सीमित हो गई है; और धन, आय और उपभोग में असमानताएं लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों का सामना कर रही है, और कहा कि ये मुद्दे विकास और रोजगार सृजन की स्थिरता के लिए खतरा हैं।

केंद्र सरकार के दृष्टिकोण पर सवाल

सरकार के दृष्टिकोण पर सवाल उठाते हुए रमेश ने कहा कि यह देखना बाकी है कि आगामी बजट सांख्यिकीय भ्रमों के आरामदायक दायरे से बाहर निकलकर आर्थिक वास्तविकताओं को स्वीकार करता है और सार्थक सुधारात्मक कदम उठाता है या नहीं। उन्होंने चेतावनी दी कि उच्च जीडीपी वृद्धि दर, जो बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन के लिए महत्वपूर्ण है, तब तक कायम नहीं रह सकती जब तक आगामी बजट में इन संरचनात्मक चुनौतियों का तत्काल समाधान नहीं किया जाता।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा